

कोलोण की डायरी के कुछ पृष्ठ

जर्मनी में हिटलर अभी मरा नहीं

शर्म-रहित को मर ही नहीं सौंप कर बाहर फेंका होगा। अब इस कहान को चित्ताएँगे ? इसकी इन्हीं कीर्ति पतिलेख हैं।

किसी बड़ी कल्पना की किसी गड़ी निरालिका में उसे उभरते ही गुंजाइश दिखाई तो तो पता चलता है, महीने का किराया-पट्टा साज (पगडो सभके लो) के रूप में देना होगा और किराये-संयोजन से वे कर कार्याय में ही अन-मासी इंग्लैंड-वर्ग के व्यवस्था भी स्पष्ट करनी होगी। दोस हजार मारके (बीस हजार रुपये) सहायित वहाँ से लाऊँ ?

समय में नहीं आता इतनी सुतो-का क्या है। एक स्थान में बलाका, असाध में पहा दुध से उल-काह को फल-काय कर पीएँ वाली कलाका की पुरिष्ट ही रही है। १९५५ में तो जर्मन विदेश में जाने वाले व्यक्ति को कनो पर उठा कर धन-दातित और क्षमाकर देने के लिए उछल पड़े थे, वे अब हर विदेशी के जर्मन-भूमि पर कदम रखते ही अपने चहुँ-बन्धु के उरिजगा रहने का कारण समझ लेते हैं। आज इनके दूध सात की गारण्टी नहीं कि मैडिकल में पर गरी बनकी बंदी का टोक भी गकिरा मिल सकता, अच्छी शिक्षा पाने के बाद भी बड़ा शिक्षण जैसी नौकरों का चर्चवा या नहीं। दुनिया के अन्य देशों में मजदूरों इन्हीं कार्यवाहका प्रिष्ठ है, लेकिन आजने बाले बाल की चिन्ता रवा की नीचे हाथक लिए हुए हैं।

कम, विदेशी शक्ति है। फिर मा-वीय, साविभानी, बंगला देसी को छाँड़िए, तुर्की, इतालियन, पुर्तगाल-मिषक और लेडी शोको को भी जर्मन-वाद स्वीकार करने का संभव नहीं।

एक बात दिमाग से जाती है, कर्कश-एन्डरह तोले तुर्की की जर्मन जगत को नफासे में लय या कर सप्टिम सॉटि गए, तो इनके आराखानों का क्या होगा ? दो-बार में निर्वात, वे कथ में दुहाय कथान लाने की प्रसिध्ता करा जाएँगे ? अस्पतालों और सड़कों की सफाई में इनमें पर कचरो के उभार कानि साक करोगा ? लगता तो यही है कि दुनियाँ वक्ष संवे-गाते एक दुखरे को मजदूर रहते हैं।

● आलोक मेहता

✪ अक्षय — महानगर — कोलोण में एक बड़ा हमला हो रहा है। नवम्बर तक काम पूरा हो जाएगा, तब उसमें एक फ्लैट मिलने की आशा है। जब तक फ्लैट में भी जगह नहीं। इंग्लैंड १५-२० किस्मोंका बुर एक गेज महानगर-इन्डिया में एक जर्मन बूटो-उत्पात में टॉनिक निरवाय लय का एक नमूना है दिया है। कम से कम यति को सार विधान को बसाह तो है। सजपुत्र गाँव में महानगरीय-नेधरा का बलाकारण करी है। पर इनाइडर उभरते हुए बड़े मजान में उभरने लगे हैं, बंद-बंदी सफल से जगह से मिलने जाते हैं। बंद कितने-

गत हो जाती है। और इन्हीं कीर्ति-मिसार-प्रथका नहीं रहता।

इनाइडर साहब दुखी विश्व युद्ध के उभरने हिटलर की सेना में थे। हिटलर के हाथों इन्हे बहादुरी का तगमा भी मिला था। उसका फोटो इनके पास सुरक्षित है। लेकिन बादर सजा कर लगे लकते। सामुदाय जर्मनों में कोई उर्वर नागरीक जर्मने को हिटलर के जुड़ा नहीं दिखाना चाहता। इनाइडर साहब तो फिर भी दिल से जादुत लगे हैं। लेकिन क्या सामान्य जर्मने में हिटलर की बकाशी जप तक समाप्त हो सकती है ? याचर डी-संगर ही दुखाका उभर मिलेगा।

१८ अक्षय — महानगर कोलोण महामुद्रत आन्दोलन एक कतिती लिली है, जिसका सीधैक ही हिटलर पर नहीं। कचिका में दुर्घमा गया है कि जर्मन बलाक में एक ही हिटलरी-बकीर्षित की, बलाक कितनी स्पष्ट दिखाई देती है। और फिर उनकी कचिका ही बकी, स्वयं परिचय जर्मन गकार की एक रिपोर्ट इस सात्र को पुरिष्ट करती है, परिचय जर्मन आला-रि कुरवा विषयाय दुसरे उकाईशत रिपोर्ट के अनुसार सात्र के कर्मी के बल-उरिजगावन्ती आरकणीकरण को संख्या में तैली से बुद्धि हुई है और सभयन भी बड़ रहा है। वे सगठन जप भी कितना ही अक्षय जगदमी लागते हैं। इस रिपोर्ट के अनुसार कदर उरिजगावन्ती संसगत सांघिस्ट पार्टी को सगठन संख्या सात हजार है।

क्षिपी को जर्मनी के सागर विवालयों के लिए सक्रिय है और इस विचारधारा का फण्डा लिए चुपका है कि दूसरे विश्व युद्ध के लिए हिटलर उतरदायी नहीं थे। यही नहीं जानी पूरा थे सासाकारी अरुसाधको का उरुज के अचाने के लिए भी पर सगठन प्रयाय जागे का दूर है।

सरकारी रिपोर्ट के अनुसार परिचय जर्मने में उरु उरिजगावन्ती संसठनों की संख्या ५५ ने भी कथक है। उरि जगदगा उरुनीय इकाय लोग इन संसधायों से जुड़े हुए हैं। १९६० में हाफमान अर्द्ध सीनेक संगठन की बहादुर बाणी थी, कथीक उरुने म्पुनसक के अक्षय जगदगावन्ती से वय विरकण कर मयानक भारत पैदा कर दिया था। इस उरु विरकण में कतिर लोग मारे गए थे और कचिका को भी जयल दए थे।

६ पाचै—सभी जर्मने तो मरने में बड़ी चिन्ता, दुखाका एक पदा इलाण मिसा। जर्मने सौबने के लिए किसी ने तपे सौएक उभरते में शभ संजा। ही सीएक उरुजगा कार्यालय में अरिजगावन्ती है और सीमती सीएक पाट-जगदगा सीकने के रूप में जर्मने मजाने है। इनकी को उरु पैतीस से कम है, लेकिन कचिका को संख्या है चार। सीकने वाली पात है, युवा उभरते और पात बच्ये, दुसरे भी युवा म-कम। इनको बकासीक कर लगता है, जप पर बगाते हैं, सीक कचिका को जनासासक जैती एक संख्या से का कर गाँव किका